अन्तिम संस्कार

मूल्य : 10.00 मात्र

अन्तिम संस्कार विधि

प्रकाशक :
विज्येश्वर ज्योतिष कार्यालय
गोल गुजराल, जम्मू

अन्तिम-संस्कार-विधिः

जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु-र्ध्रुवं जन्म मृतस्य च
तस्मात्-अपरि-हार्येर्थे न त्वं शोचितम्-अर्हसि।।

भगवद्गीता अ० 2 श्लो० 27

अर्थ :—जन्म लेने वाले की निश्चित मृत्यु और मरने वाले को निश्चित जन्म होना सिद्ध है, हे अर्जुन इस से भी तू इस बिना उपाय वाले विषय में शोक करने के योग्य नहीं है। उदय होने वाले सूर्य का अस्त होना निश्चित है, जन्म के साथ मृत्यु जुड़ी हुई है, युग बदले अनेकों परिवर्तन हुये और जगत् में नित्य परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे परन्तु यह नियम न बदला न बदलेगा, कि जन्म के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म होता है, दिन और रात की भाँति जन्म और मृत्यु का चक्र चलता है, कौन कैसे और क्यों जन्मता और मरता है, यह एक रहस्य है, परन्तु इतना जानना आवश्यक है, कि मृत्यु अटल है, उसके लिये शोक करना निष्फल है।

एक हिन्दू के लिये जैसे जातकर्म आदि संस्कार वेद विध्यनुसार करने का विधान है, ऐसे ही अन्तिम संस्कार भी यज्ञ के रूप में किया जाता है, जिस यज्ञ में पूर्णाहुति के रूप में पञ्चभौतिक शरीर अर्पण किया जाता है, यह अन्तिम संस्कार रूपी यज्ञ किस का कहाँ और कब होगा उस समय से प्रायः हर एक मनुष्य अनभिज्ञ होता है, इस कारण से

अन्तिम संस्कार के लिये योग्य पुरोहित का मिलना अथवा प्रबन्ध करके रखना कठिन होता है, जबकि वर्तमान काल में काश्मीरी पण्डित काश्मीर से उजड़ कर सारे संसार में बिखरे पड़े हैं, काश्मीरी पण्डित अपनी संस्कृति की अंगभूत अन्तिम संस्कार विधि को भूल ही न जायें, इसी भावना से हमने यह अन्तिम संस्कार विधि छपाई है।

"मृतक के प्राण निकलने से पहले की सावधानी"

जब यह समझ में आये, अब मरण-सन्मुख मनुष्य के प्राण कण्ठ पर आये हैं, तो उस को चारपाई तखतपोश अथवा बिस्तरे से उठाकर पृथ्वी पर उतारें-पृथ्वी को पहले से ही गोबर से लेपन करवा कर उस पर दर्भ तथा घास बिछा कर थोड़ा सा तिल फेंके, साफ लोटे में गंगाजल अथवा शालिग्राम से लिया जल तैयार रखें। जो क्रियाकर्म का अधिकारी पुत्र आदि हो, वह उस मरणासन्न मनुष्य को उसी दर्भ के बिछौने पर अपने दायें घुटने पर लिटा कर रखें, "श्रीमद्भगवत्-गीता" का पाठ अथवा सामूहिक रूप से सभी उच्चारण करें **"ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ॐ"** ब्राह्मी विद्या पढ़ते हुये गंगाजल अथवा चरणामृत पिलायें, प्राण निकलने पर मृतक को इसी दर्भ के बिछौने पर अच्छी प्रकार से लिटा कर सिर दक्षिण की ओर रखें, मृतक के सभी अवयवों हाथ पावों को खोलकर सुव्यवस्थित रूप से रखें, सिर के नज़दीक ही जलता हुआ चोंग (दीपक) उत्तर की ओर मुँह करके रखें, आँगन में लगभग दो गज़ चौरस पृथ्वी को गोबर तथा मिट्टी से लेपन करके सामग्री एकत्रित कीजिये-

सामग्री—सफेद लट्ठा लगभग 10 मीटर, सुई धागा, छटांग भर रुई, पुलहोर (न मिलने पर) ऊन अथवा सूत का मोज़ा, शहद 1 तोला, केसर रती भर, घी आधा किलो (असली) धूप, अखरोट 15, यज्ञोपवीत 1, चोंग छोटे 10 न मिलने पर (डोने), दूध दही पाव-पाव भर, जव का आटा आधा किलो, जव दाना आधा किलो, वारी बडी 1 अदद, टाकू पर्वे 5 अदद, कतरू अथवा बड़ा टाकू, टोकरी बड़ी 1 अदद, ब्रिय मेव शीरीन् आदि लगभग 1 किलो, सिन्दूर 1 तोला, नारीवन 5 बन्दी, दर्भ के विष्टर 2 अदद, पवित्र 2 अदद, लकड़ी लगभग 10 मन 4 (सौ किलो।)

नजार और दर्ज़ी को बुलाकर, विमान, स्रुव तथा स्रुच लकड़ी के जैसे अगले नक्शे में दर्ज हैं, बनायें, कफन और कनटोपा, कनटोपे पर उल्टा गायत्री मन्त्र लिखें—

ॐ त्-या दचो प्रनः योयोधिहिमधी स्यवदे गोंभ ण्यं रेर्वतुवि त्सर्त स्वः वर्भु भू ॐ

यही मन्त्र स्त्री के लिये भी है।

चौका (किचन) साफ करके एक पाव जव के आटे के चुचवरु (छोटे-छोटे फुलके) बना लीजिये, बड़े एक पतीले या (दीकचे) में गर्म पानी मृतक के स्नान के लिये रखें, उबालने की आवश्यकता नहीं, एक बहुगुन में लगभग एक किलो चावल का बत्ता बनायें, पावभर आलू का भी आलू चूर्मा बना कर रखें।

आँगन में लेपन की हुई जगह पर अन्दर वाला मृतक के सरहाने पर रखा हुआ चोंग बाहर निकाल कर रखें, धूप

जलायें और जव के आटे से ब्रह्मकलश भूतपंचक आदि पुस्तक के अन्त में लिखे हुये हैं, उसी चित्र के अनुसार बनावें। जव के आटे से उत्तर-पूर्व कोण पर चित्र के अनुसार ब्रह्मकलश बनाकर उसके अष्टदल पर एक चोंग विष्टर, पानी तथा अखरोट सहित रखें, कलश के नैऋति कोण के पास एक टाकू विष्टर जल तिल डालकर रखें, इस टाकू को प्रणीतपात्र कहते हैं, गायत्री अष्टदल तथा अस्त्र अष्ट दल पर एक चोंग और भैरव कलश पर वारी रखिये, इन दोनों चोंगो में पानी तथा एक-एक अखरोट रखें, भूत पंचकों पर भी पांच चोंग पानी विष्टर (विष्टर न होने पर दर्भ के दो-दो तिनके) डाल कर रखें, जव आटे के तीन पिंड बनाकर एक टाकू में संभाल के रखें, कतरू में अथवा एक बड़े टाकू में लकड़ियाँ जला कर सुलगता हुआ आग रखिये, ब्रह्मकलश के सामने आसन डालकर जो व्यक्ति इस पुस्तक को पढ़ सके पण्डित जी के रूप में काम निभाये, उसी प्रकार क्रिया करने वाला ब्रह्मकलश के सामने बैठकर जलते हुये दीप-धूप के सामने नमस्कार करते हुये पढ़ें-(पण्डित के दायें ओर यजमान बैठे)

ॐ कारो यस्य मूलं, क्रम-पद-जठरं, छन्द विस्तीर्ण-शाखा, ऋक्-पत्रं, साम-पुष्पं, यजुर्-उचित फलं, स्यात्- अथर्वा-प्रतिष्ठा, यज्ञ-छाया, सुश्वेतैर्-द्विजगण-मधुपैर्- गीयते- यस्य नित्यं, शक्तिः सन्ध्या, त्रिकालं दुरित-भय-हरः पातु नो वेद वृक्षः।

भद्रं पश्येम, प्रचरेम भद्रं, भद्रं वदेम, श्रृणु याम भद्रं, तन्नो मित्रो वरुणो मा महन्ताम्-आदितिः सिन्धुः पृथिवी उत-द्यौः। ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव-चक्षुर्-आततम्, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्-परमं पदम्।

गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें :- ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।३।

भूतपंचकों के कलश को केवल अर्घ चढाते हुये पढें, द्रष्ट्रे नमः, उपद्रष्ट्रे नमः-अनु-द्रष्ट्रे नमः, ख्यात्रेनमः, उपख्यात्रे नमः। जाताय नमः, जनिष्य-मानाय नमः, भूताय नमः, भविष्यते नमः, चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमः, मनसे नमः, वाचे नमः, ब्रह्मणे नमः, भ्रान्ताय नमः, तपसे नमः।

प्रणीतपात्र (जो ब्रह्मकलश के दायें तरफ रखा है) में केसर का तिलक और (आगे लिखे तीन मन्त्रों से तीन फूल डालते हुये पढ़ें :-(१) संव्वः सृजामि हृदयं, संसृष्टं मनो अस्तु वः (२) संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया, हृदयानि वः (३) आत्मा वो अस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।

कलश के पूर्व के तरफ अर्घ सहित तिलक फैंकते हुये पढ़ें–**ये देवाः पुरः सदोग्नि नेत्रा, रक्षोहणस्ते–नः पान्तु, तेनोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।**

उत्तर की ओर अर्घतिलक फैंकते हुये पढ़ें :–

ये देवा उत्तरात् सदो मित्रा–वरुण–नेत्रा, रक्षोहणस्ते नः पान्तु, ते नो वन्तु, तेभ्यः स्वाहा।

ऊपर की ओर अर्घ फैंकते हुये पढ़ें–

ये देवा उपरिषदः सोमनेत्रा अव–स्वदन्तो रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नो वन्तु तेभ्यः स्वाहा।

प्रणीतपात्र के दर्भ के विष्टर से (दर्भ से) पूजा सामग्री को छींटे देते हुये पढ़ें–

आपो हिष्ठा मयोभुव–स्तान–ऊर्जे, दधातन, महे रणाय चक्षसे, यो वः शिवः तमो रसस्तस्य भाज–यते–ह–नः।

उषतीर्–इव–मातरः, तस्मा–अरंग– माम वो, यस्य क्षयाय जिन्वथ, आपो जन यथा चनः।

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें–

अध्वर्यो यं यज्ञो–अस्तु देवा, ओषधीभ्यः पशुभ्यो मे धनाय, विश्वस्मै भूताय ध्रुवो अस्तु देवा, सपिन्वस्व घृतवत्–देवयज्ञ।

दो दर्भ के टुकड़े अपने नीचे पृथ्वी पर डालते हुये पढ़ें–

इमम्-इन्द्रो-अदीधरत्, ध्रुवं ध्रुवेण हविषा हविः। तस्मै सोमो-अधिब्रुवत्-तस्मा-उ-ब्रह्मणस्पतिः।

कलश को दो दभकाण्ड डालते हुये पढ़ें-

ध्रुवा-द्यौर्-ध्रुवा-पृथिवी, ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्-इदं जगत् ध्रुवो राजा-विशम्-असि।

कलश के निचले भाग में गणेश जी को तिलक लगाते हुये पढ़ें-

निषुसीद गणपते गणेषु त्वामाहु-र्विप्रतमं कवीनाम्-न-ऋते त्वत्-क्रियते किंचनारे, महाम्-अर्कं, मघवन्-चित्रम्-अर्च।।

कलश को तिलक लगाते हुये पढ़ें-

अग्निम्-ईडे, पुरोहितं, यज्ञस्य देवम् ऋत्विजम्। होतारं रत्न-धातमम्। ॐ तत्-विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः-समिन्धते, विष्णो-र्यत्-परमं-पदम्।। ऋतुपतये नारायणाय वासुदेवाय लक्ष्मी सहिताय नारायणाय नमः, ॐ भगवते भावाय देवाय, उमासहिताय परमेश्वराय, भगवते विनायकाय वल्लभा सहिताय श्री महागणेशाय, ॐ ह्राँ ह्रीं सः सूर्याय, प्रभा सहिताय आदित्याय नमः, ॐ

भगवत्यै नमः, अमायै नमः कामाय नमः, चार्वङ्ग्यै नमः, टंकधारिण्यै नमः, तारायै नमः, पार्वत्यै नमः, यक्षिण्यै नमः इष्टदेव्यै नमः, अभयं-करीदेव्यै नमः, क्षेमंकरी-भगत्यै नमः सर्व शत्रुधातिन्यै नमः, इहराष्ट्राधिपतयेनमः, हेरुकारिभ्य नमः व-टुकादिभ्यः नमः। ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति शूराः, तनस्त्रायतां तन्वः सर्वतो महत् आयुष्मन्तो जराम्-उपगच्छेम जीवाः।

दीपधूप—यजमान अपने हृदय को जल से छिड़कते हुये पढ़ें—**तीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव, समानानां भवति मानः शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।**

अनामिका ऊँगली पर पवित्र धारण करते हुये पढ़ें—**वसोः पवित्रम्-असि शतधारं वसूनां पवित्रम्-असि, सहस्त्र-धारम् अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।**

अपने आप को तिलक लगाते हुये पढ़ें—**परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।**

दीपक को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें—**स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरा-पहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।**

धूप को तिलक आदि चढाते हुये पढ़ें—**वनस्पति रसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः।**

सूर्यभगवान् को तिलक आदि लगाते हुये पढ़ें—**नमो धर्म निधानाय नमः स्वकृत-साक्षिणे, नमः प्रत्यक्षदेवाय भस्कराय नमो नमः, समालभनं गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः**

अब यज्ञोपवीत बाँया रखकर सारी क्रिया करें—किसी पात्र में अर्ध सहित जल दायें हाथ के ऊपर से डालते हुये पढ़ें—**यत्रास्ति माता न पिता, न बन्धु, र्भ्रातापि नो-यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते यत्रदिनं न रात्रिस्तत्रा-त्म दीपं शरणं प्रपद्ये, आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीप धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु, दीपो नमः धूपो नमः तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्, तिथौ-अद्य गणपत्यादि-कलशमण्डल-याग-देवताभ्यः, दक्षिणे अस्त्राय, वामे गायत्र्यै, मध्ये भैरवाय, दक्षिणे महादंष्ट्राय पश्चिमे करालाय, उत्तरे मदोत्कटाय. पूर्वे श्मशानाधिपतये, मध्ये भैरवाय,**

आग्नेये वटुकादिभ्यः (मृतक का नाम लेकर पितः-अमुक-गोत्रोत्पन्नः) अन्त्यक्रिया निमित्तं एष ते दीपः, एष ते धूपः।

चावल सहित-दर्भ के दो तिनके सीधे हाथ में लेकर गायत्री मन्त्र तीन बार पढ़ें-**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु-र्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् (३) तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत् महागण. पत्यादि-कलश-देवतानां अस्त्रस्य गायात्र्याः भैरवस्य महादंष्ट्रस्य करालस्य मदोत्कटस्य श्मशानाधिपतेः भैरवस्य वटुकादीनां-अर्चाम्-अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व**

हाथ में पकड़े हुये चावलों को कन्धों से फैंक कर दर्भ के दो तिनके निर्माल्य में डालें-नये दर्भ के दो-दो तिनके आसन के रूप में कलश को डालते हुये पढें-

गणपत्यादीनां कलशमण्डल-देवतानां दक्षिणे अस्त्रस्य-वामे गायत्र्याः, मध्ये भैरवस्य दक्षिणे महाद्रष्ट्रस्य, पश्चिमे कारालस्य, उत्तरे मदोत्कटस्य। पूर्वे श्मशानाधिपतेः, मध्ये भैरवस्य आग्नेये वटुकादीनां इदं आसनं नमः।

चावल सहित दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़ते हुये पढ़ें-**कलश मण्डल-देवताभ्यः, अस्त्राय गायत्र्यै, भैरवाय, महादंष्ट्राय, करालय, मदोत्कटाय,**

श्मशानाधिपतये, भैरवाय, वटुकादिभ्यः युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय।।

चालव के दाने फैंक कर नये चावल के दानें दर्भ के साथ रखकर पढ़ें–**कलशमण्डल-देवता, अस्त्रं गायत्रीं भैरवं, महादंष्ट्रं करालं, मदोत्कटं श्मशानाधिपतिं आवाहयष्यामि ॐ आवाहय**

टाकू में तिलक जल आदि डालते हुये पढ़ें–**पाद्यार्थम्-उदकं नमः, शन्नो देवीर्-अभीष्टये आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभिस्त्रवन्तु नः, भगवन्तः पाद्यम्-पाद्यम्।**

टाकू में रखे हुये विष्टर या दर्भ के दो तिनकों से कलश को छिड़कते हुये पढे–**महागणपत्यादिभ्यः कलशमण्डल-देवताभ्यः अस्त्राय गायत्र्यै भैरवाय; महादंष्ट्राय, करालाय, मदोत्कटाय, श्मशानाधिपतये भैरवाय वटुकादिभ्यः पाद्यं नमः।**

पाद्य शेष निर्माल्य में छोड़ कर फिर से टाकू में नया जल अर्ध्य के लिये डालते हुये पढ़े–**शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये शंयोर्-अभिस्त्रवन्तु नः, भगवन्तः अर्घ्यम्-अर्घ्यम्। कलशमण्डल देवता, अस्त्र, गायत्रि, भैरव, महादंष्ट्र, कराल, मदोत्कट, श्मशानाधिपते,**

भैरव, वटुका-दयः इदं वो अर्घ्यं नमः

तिलक लगाते हुये पढ़ें-**कलशमण्डलदेवताभ्यः अस्त्राय-गायत्र्यै भैरवाय महादंष्ट्राय करालाय मदोत्कटाय श्मशानाधिपतये भैरवाय वटुकादिभ्यः तिलकं नमः।।** इन्हीं नामों से अर्घपुष्प चढ़ाते हुये पढ़ें-**अर्घो नमः पुष्पंनमः।**

फिर से वस्त्र के रूप में फूल डालते हुये पढ़ें-**एताभ्यः कलशदेवताभ्यः महादंष्ट्रादिभ्यः श्मशान-भैवेरभ्यः वासो न-मः।**

आचमन के रूप में जल डालते हुये पढ़ें-

कलशमण्डल-देवताभ्यः श्मशान- भैरवेभ्यः आचमनीयं नमः-टाकू में दक्षिणा के लिये नया जल तथा सिक्के डालते हुये पढ़ें-**महादंष्ट्रादिभ्यः श्मशानभैवरवेभ्यः दक्षिणायै तिलहिरण्य रजतनिष्कर्णं ददानि, एता देवता स दक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।**

खोसू (कटोरी) से तर्पण करते हुये पढ़ें-

ॐ तत्- सत्- ब्रह्म- अद्यतावत्- तिथौ- अद्य-मास-तिथि-वार का नाम लेकर **(पितुः अथवा**

मातुः) (जिसका देहान्त हुआ हो) **अन्त्य-क्रिया-निमित्तं तिलाम्भसा-स्वर्ग -प्राप्तिर्-अस्तु, परा- तृप्तिर्-अस्तु-एताः कलश देवताः श्मशान-भैरवाः प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।**

अन्त में सब कलशों को फूल चढ़ाते हुये पढ़े :—**ॐ तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्-तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धिते विष्णो-र्यत्-परमं पदम्।**

(धूपदीप समाप्त)

अब कतरू अथवा बड़े टाकू में थोड़ी शुद्ध मिट्टी डालकर उसके ऊपर सूखे छोटे-छोटे लकड़ी के टुकड़े रख कर अग्नि जलायें, अग्नि में तिल चावल के दाने डालते हुये पढें—**पात्रं तिलाऽक्षतै-र्मिश्रं, कुसुमोदक-विष्टरैः अग्ने श्चै-शान दिक्-भागे प्रणीतम्-अभिधीयते। प्रणीतं नै-ऋर्ते स्थाप्यं स विष्णु-नात्र संशयः।**

अग्नि के सामने, आप अपने दायें तरफ एक चोंग रखिये, इस चोंग में जल विष्टर तिल डाल के रखें, यह "प्रणीत पात्र" कहलाता है, इस में तीन फूल डालते हुये पढ़ें—**सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः, संसृष्टास्तन्वा सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संय्या वः, प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो**

अस्तु संप्रियः, संप्रियास्तन्वो मम।।

अब दो दर्भ के तिनके अग्नि में थोड़ा सा जला के अग्नि के टाकू में दाहिने तरफ डालते हुये पढ़ें–**निर्दग्धं रक्षो, निर्दग्धा–रातिर्–अपाग्ने। अग्निम्–आमादं जहि, निष्क्रव्यादं सीदा, देयजनं वह।**

प्रणीतपात्र में से नव बार जल से अग्नि को छिड़कते हुये पढ़ें–**ऋतन्त्वा सत्येन–अग्नि परिसमूहामि (१) सत्यं त्वर्तेन परिसमूहामि (२) ऋतसत्याभ्याँत्वा परिसमूहामि (३) ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि (४) सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि (५) ऋत सत्याभ्यांत्वा पर्युक्षामि (६) ऋतंत्वा सत्येन परिषिञ्चामि (७) सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि (८) ऋत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि** (९) ज्वाला लिंग के ऊपर रखे हुये नारकतरू के पूर्व की ओर पाँच दर्भ के तिनके, दक्षिण की ओर तीन, उत्तर की ओर तीन, पश्चिम की ओर पाँच तिनके फैंक कर अपने बायें तरफ एक टाकू में एक चुचवरू उसके ऊपर थोड़ा सा जव रखें फिर स्रुच यानी दो मुख वाले लकड़ी के वुमुनहुर के ऊपर विष्टर रखें और हाथ में उठा कर पढ़ें–**मातुः** अथवा **पितुः अन्त्य क्रिया निमितं,** स्रुच दर्भ के विष्टर सहित उल्टा चुचवुरू पर डाल कर पढ़ें–**अग्नये वायवे सूर्याय ब्रह्मणे प्रजापतये**

कूष्मर्षेभ्य जुष्टं निर्वपामि, फिर से स्त्रुच को उठा कर विष्टर को धो लीजिये अग्नये वायवे सूर्याय ब्रह्मणे प्रजापतये जुष्टं प्रोक्षामि- पढ़ते हुये स्त्रुच से यही विष्टर इसी चुचवुरू पर डालें। स्त्रुच अपने स्थान पर रखें और चुचवरू के अन्दर एक दर्भ का तिनका ठोंस दें, एक अखरोट हाथ में लेकर पितुः....अन्त्यक्रिया निमित्तं आज्यं अर्पयामि नमः स्त्रुव (दूसरे वुमुन हुरु) से घी की आहुतियाँ अग्नि में डालते हुये चुचवरू के टुकड़े बनाकर उसी के साथ डालते हुये पढ़ें–(१) आयुष्यः प्राणं सन्तनु स्वाहा प्राणात् व्यानं सन्तनु स्वाहा (२) व्यानात् अपानं सन्तनु स्वाहा (३) अपानात् चक्षुः सन्तनु स्वाहा (४) चक्षुषः श्रौत्रं सन्तनु स्वाहा (५) श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा (६) वाचः आत्मानं सन्तनु स्वाहा (७) आत्मानः पृथिवीं–सन्तनु स्वाहा (८) पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा (९) अन्तरिक्षात् दिवं सन्तुनु स्वाहा (१०) दिवः स्वः सन्तनु स्वाहा।

ऋतुतिथ्यादिभ्यः देवताभ्यः स्वाहा, ब्रह्मणे स्वाहा, अभिजिते स्वाहा–चुचवरु के छोटे-छोटे टुकड़े भी घी की आहुति के साथ डालते जायें-वामे गायत्र्यै स्वाहा, मध्ये भैरवाय स्वाहा, दक्षिणे अस्त्राय स्वाहा, भूतपंचकेभ्यः स्वाहा, ॐ

भूर्लोकायस्वाहा, ॐ भुवोलोकाय स्वाहा, ॐ स्वर्लोकाय स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्व-र्लोकाय स्वाहा।

न्यूनम्-अतिरिक्ते जुहोमि स्वाहा, अतिरिक्तं न्यूने जुहोमि स्वाहा, समं समे जुहोमि-स्वाहा, अनाज्ञातं यदाज्ञातं यत् यज्ञे क्रियते मिथः, सर्वं तत्-अग्ने कल्पय-त्वं हि वेत्थ यथा यथं स्वाहा, आज्य-शेषं स्त्रुच्या-सिच्य दर्भान्-अग्नौ-प्रास्य (आज्य पात्र का घी आदि सभी अग्नि में फैंके) अखरोट जो घी पात्र में होगा वह पूर्णाहुति का मंत्र पढ़ते हुये स्त्रुच से अग्नि में डालिये पूर्णाहुतिः डालते हुये पढ़ें-आश्रावितं अत्याश्रावितं-वषट्कृतं-अवषट्-कृतम्-अननूक्तं-अत्यनूक्तं च। यज्ञे-तिरिक्तं कर्मणो यत्-च हीनम्-अग्नि-स्तानि प्रविदन् एतु कल्पयन् स्वाहा (नोट) अग्नि का अछिद्र मत कीजिये-जब कि यही अग्नि आप ने श्मशान में भी साथ लेना है।।

कलशपूजा तथा अग्नि पूजा समाप्त करके वुज़ में लेपन करवा कर मृतक को लायें, पहने हुये कपड़े उतारिये पुरुष हो या स्त्री स्नानपट लगाइये, गर्म पानी से स्नान कीजिये, गुह्यस्थान आदि को मिट्टी तथा पानी से साफ कीजिये, स्नान करके कर्ता आँगन के पूजा स्थान से अस्त्रकलश, भैरवकलश, गायत्री कलश के चोंगू और वारी का जल लाकर गर्म पानी के स्नान के पानी में मिलायें उस जल में दूध, दही घी सर्षप

तिल डालें, शव को बिठा कर रखिये, निम्न लिखित १६ ऋचाओं से आहिस्ता आहिस्ता बाल्टी में से कर्ता पानी डालता जाये–

(१) ॐ सहस्त्र-शीर्षा पुरुषः, सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् स भूमिं विष्वतो वृत्वा-ऽत्यतिष्ठत्-दशांगुलम्।। (२) पुरुष एवेदं सर्वं, यत्-भूतं यत् च भव्यम्। उतामृत-त्वस्ये शानो-यत्-अन्नेनाति रोहति।। (३) एतावानस्य महिमातो, ज्यायान् च पूरुषः। पादोस्य विश्वा-भूतानि, त्रिपाद्-अस्या मृतं दिवि।। (४) त्रिपाद्-ऊर्ध्वं उदैत्-पुरुषः, पादो स्येहा भवत् पुनः। ततो विश्वं व्याक्रामत्- सशना-नशने-अभिः।। (५) तस्मात् विराड्-अजायत, विराजो अधि पूरुषः। सजातो-अत्यरिच्यत, पश्चात् भूमिम्-अथो पुरः।। (६) यत्-पुरुषेण हविषा देवा यज्ञम्- अतन्वत। वसन्तो अस्यासीद्-आज्यं ग्रीष्म-इध्मः शरत्-हविः।। (७) तं यज्ञं बर्हिषि प्रोक्षन् पुरुषं जातम्-अग्रतः। तेन देवा-अयजन्त-साध्या ऋषयश्च ये।। (८) तस्मात्-यज्ञात्-सर्वहुतः, संभृतं पृषत्-आज्यम्। पशून्-तान्-चक्रे, वायव्यान्-आरण्यान्-ग्राम्यान् च ये।।

(९)तस्मात् यज्ञात् सर्वहुतः, ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् यजु-स्तस्मात्-अजायत। (१०) तस्मात्-अश्वा अजायन्त, ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे, तस्मात् तस्मात् जाता अजावयः।। (११) यत् पुरुषं व्यदधुः, कतिधा-व्यकल्पयन्। मुखं किम्-अस्य, कौ बाहू, का ऊरू पादा उच्यते।। (१२) ब्राह्मणोस्य मुखम्-आसीत्-बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यत्-वैश्यः, पदभ्यां शूद्रो अजायत।। (१३) चन्द्रमः मनसो जातः, चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखात्-इन्द्रश्चाग्निश्च, प्राणात् वायुर्- अजायत।। (१४) नाभ्या -आसीत्- अन्तरिक्षं, शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पदभ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान्-अकल्पय-न्।। (१५) सप्तास्या सन्-परिधयः-त्रिसप्त समिधः कृताः। देवा-यत् यज्ञम्-तन्वाना-आबन्धन्-पुरुषं पशुम्। (१६) यज्ञेन यज्ञम्-अयजन्त देवा-स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

मृतक को स्नान करने वाले सामूहिक रूप में उच्चारण करते रहें–"**ॐ श्रीमत् नारायण नारायण नारायण**"

अथवा **क्षन्तव्यो मेपराधः–शिव शिव शिव भो।**

श्री महादेव-शम्भो! मृतक, पुरुष हो या स्त्री नया स्नानपट बाँधिये, पुरुष को पावों से नया यज्ञोपवीत डालकर बायें बाजू में रखिये, पुराना यज्ञोपवीत सिर से निकाले, नव द्वारों (नाक के दो नथने दो कान, दो आँखें, दो गुह्यस्थान और मुख को छोटे-छोटे धूप के गोलों से बन्द करके, अनामिका ऊँगली में पवित्र डाले सिन्दूर का तिलक और नारीवन बांधिये, यदि मृतक महिला हो तो नारीवन भी बायें कान में फंसा के रखें, मृतक के मुँह में एक सिक्का डालिये, लट्ठे तथा राम-राम पट्टू आदि से मृतक के शरीर को ओढ कर सिर पर लट्ठे का कनटोपा जिस पर केसर से उल्टा गायत्री मन्त्र लिखा हो रखें यानी मृतक का सिर जिस कपड़े से ढाँपा जाये उस पर उल्टा गायत्री मन्त्र अवश्य लिखें, मृतक के पाँवों के तलों को थोड़ा सा शहद मले तथा घास का पुलहोर पाँवों में डालें पुलहोर में थोड़ी सी रुई भी रखिये (पुलहोर न मिलने पर ऊन या सूत का मोजा डालें-क्रिया करने वाला (यानी कर्ता) बाहिर पूजा स्थल पर निकल कर, चुचवरु के शेष बचे टुकड़े नदुर चूर्मा अथवा आलू चुर्मा भूत पंचकों के चोंग में डालें, अर्थी (यानी विमान) जो नजार ने पहले ही बना कर रखा होगा अथवा पहले का बना बनाया ही प्रयोग में लाना हो उसको अच्छी प्रकार से धोकर उस पर दर्भ बिछा कर उस पर तिल छिड़कें शव को उसी अर्थी पर रखिये, ऊपर सफेद चादर अथवा शाल आदि डालना हो डालिये, अर्थी को फूल की मालाओं से सजायें अर्थी को आंगन में निकाल कर शव का सिर दक्षिण की तरफ होना चाहिये; अर्थी के ऊपर फूल मेवा आदि फैंकिये, अब अर्थी

के लिये रत्नदीप धूप कर्पूर जलायें सभी खड़े होकर सामूहिक रूप से आरती करें–

जय नारायण जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे उद्धर मां सुरेश-विनाशन्-पतितोहं संसारे घोरं हर मम नरकरिपो! केशव-कल्मष-भारम् मां-अनुकम्पय दीनं अनाथं, कुरुभव-सागर-पारम्।।

जय जय देव, जया सुर सूदन, जय केशव, जय विष्णो जय लक्ष्मी मुख-कमल-मधुव्रत, जय-दश-कन्धर-जिष्णो। घोरं हर मम नरक रिपो! केशव................(२)

यद्यपि सकलं अहं कलयामि हरे, नहि किमपि-ससत्वम् तदपि न मुञ्चति मामिदं-अच्युत पुत्र कलत्र ममत्वं घोरं हर ममनरकरिपो! केशव-कल्मषभारं........(३)

पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भनिवासम् सोढुम्-अलं पुनर्-अस्मिन् माधव-माम्-उद्धर-निजदासम्। घोरं हर मम नरकरिपो..............(४)

त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत-त्वं सुहृत् कुलमित्रम् त्वं शरणं शरणागत वत्सल, त्वं-भव-जलधि-वहित्रम्। घोरं हर मम

नरकरिपो..............(५)

जनक-सुतापति-चरण-परायण शंकर-मुनिवर गीतं। धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम, वारय संसृति भीतिम्। घोरं हर मम नरकरिपो....(६)

समयानुसार "जय जगदीश" भी पढ़े (शंख बजायें)

अब खड़े होकर क्रिया करने वाला पढ़े-

तत् सत् ब्रह्म-अद्य तावत्-मास-पक्ष-तिथि-वार तथा नाम गोत्र सहित लेकर-**पितुः** अथवा **मातुः स्वर्ग-प्राप्त्यर्थं धूपं रत्नदीपं कर्पूरं अर्पयामि नमः** (नोटः-यहाँ ब्रह्मकलश का अच्छिद्र न करें) जबकि कलश का चोंग आदि आपने श्मशान पर भी लेना है। कलश के पास तीन जव के आटे के पिंडों में से एक पिंड हाथ में उठा कर पढ़ें-**तत् सत् ब्रह्म-वार-तिथि**-मृतक का नाम गोत्र सहित पढ़कर अर्थी पर शव के सिर के तरफ रखते हुये पढ़ें-पिता अथवा माता.....**अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते बोधः पिण्डः प्रेतः तृप्यतु।**

अब सारा सामग्री कलश का चोंग अखरोट सहित, अस्त्र कलश चोंग 'गायत्री कलश, का चोंग' अखरोट सहित 'भैरव कलश, की वारी' सब सामग्री इकट्ठी करके किसी टोकरी में उठा कर श्मशान पर ले जाइये-कलश आदि जो आंगन में डाला है अर्थी निकलने के पश्चात सब समेट कर निर्माल्य में डालें, पृथ्वी का लेपन कीजिये-चोंग भी श्मशान पर साथ लीजिये, वुज़ में भी एक चोंग जला कर रखें उसके ऊपर

कोई टोकरी आदि रखें श्मशान से वापस आने पर उस को बुझाये, क्रिया करने वाला सबसे पहले शव के विमान को अपने दाहिने कन्धे से उठाये उसके पश्चात् दूसरे लोग विमान को उठा कर श्मशान की ओर चले, चलते-चलते रास्ते में सभी साथी सामूहिक रूप से उच्चारण करें-**'क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो! श्री महादेव शम्भो।** श्मशान पर पहुँचने से पहले आधे रास्ते में अर्थी को नीचे करके शव का सिर दक्षिण की ओर रख कर मृतक को सूर्य दर्शन करवा कर जव का दूसरा पिण्ड हाथ में लेकर पढ़ें-**तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य मासस्य पक्षस्य तिथौ वासरे पिता** अथवा जो कोई भी हो **अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते मकरध्वजः पिण्डः प्रेतः तृप्यतु,** फिर से अर्थी उठा कर श्मशान पर पहुँच कर अर्थी को नीचे रखकर जव का तीसरा पिण्ड रखते हुये पढें-**तत् सत् ब्रह्म पितः अन्त्य क्रिया निमित्तं एष ते यम-दूतपिण्डः प्रेतः तृप्यतु**

श्मशान भूमि की क्रिया

चित्र के अनुसार जो पुस्तक के अन्त में दर्ज है ब्रह्मकलश-ज्वालालिंग चितावास का नकशा जव के आटे से बनाये, घर से ब्रह्मकलश का अखरोट सहित जो चोंग लाया है उसमें पानी विष्ठर डालकर ब्रह्मकलश के अष्टदल पर रखें-कलश पूजा घर में हम कर चुके हैं यहाँ धूप दीप जला

कर चोंग को थोडा सा तिलक आदि लगा कर हाथ में फूल उठा कर कलश पर डालते हुये पढ़ें–

ॐ तत् विष्णोः परमं पदं, सदा पश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्, तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते, विष्णो-र्यत् परमं पदम्।

ज्वालालिंग पर आग का टोकू या "नार कतरु" जो आप घर से साथ लाये हैं रखें, अपने बायें ओर "स्रुव" जिसका एक मुख होता है, और "स्रुच" जिस के दो मुख होते हैं रखें, अपने दायें ओर नैऋति कोण पर एक टाकू रखें, जिसे प्रणीत पात्र कहते हैं, दूसरे टाकू में घी रखें उसमें विष्टर या दर्भ के दो तिनके डालिये, बायें हाथ में उपयाम या दर्भ के सात तिनके रखकर प्रणीत पात्र में तीन बार तीन फूल डालते हुये पढ़ें–**संवः सृजामि हृदयं संस्रष्टं मनो अस्तु वः (१) संसृष्टः तन्वः सन्तुवः संसृष्टा प्राणो अस्तु वः (२) संय्या वः प्रिया-स्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम (३)**

प्राणायाम करके अग्नि को प्रणीत पात्र के ज़ल से नव बार छिड़कते हुये पढ़ें–

ऋतन्त्वा सत्येन परिसमूह्यामि, सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि ऋत सत्या भ्यान्त्वा परिसमूह्यामि। ऋतन्त्वा सत्येन पर्युक्षामि सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि, ऋतसत्याभ्यान्त्वा पर्युक्षामि, ऋतन्त्वा सत्येन

परषिञ्चामि सत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि ऋत-सत्याभ्यान्त्वा परिषिञ्चामि, ज्वाला लिङ्ग के ऊपर रखे हुये नार टाकू के पूर्व की तरफ पाँच दर्भ के तिनके, दक्षिण की ओर तीन, उत्तर की ओर तीन पश्चिम की ओर पाँच तिनकें फैंक कर अपने बायें तरफ एक टाकू में चुचवुरु उस के ऊपर थोड़ा सा जव डालिये फिर स्रुव से दो मुखवाले वुमुन हुर पर दर्भ का विष्टर रखें हाथ से वुमुन हुर उठा कर पढ़ें—

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः, प्रसवेश्विनो। बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे-यह पढ़कर स्रुच दर्भ के विष्टर सहित उल्टा चुचवुरु पर डालते हुये पढ़ें—

यमाय-अग्निष्वाता दिभ्यः जुष्टं निर्वपामि, फिर से स्रुच को उठाकर विष्टर धोकर पढ़े-**सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनो बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् आददे-यमाय अग्निष्वातादिभ्यः जुष्टं प्रोक्षामि**-यह पढ़ते हुये स्रुव से धोया हुआ विष्ठर इसी चुचवुरु, पर डाले, अब स्रुव अपने स्थान पर रखें, चुचवरु में दर्भ का एक तिनका ठोंस कें रखें, एक अखरोट हाथ में ले कर मृतक का नाम लें (जैसे **पितुः राज-भारद्वाजस्य) अन्त्य क्रिया निमित्तं यमायअग्निश्वातादिभ्यः इदं आज्यं अर्पयामि नमः** यह अखरोट घी के पात्र में सिक्का सहित डालें, आज्य दर्शन

कीजिये, स्रुव वुमुनहुरु से अग्नि में एक एक मन्त्र से आहुति डालें–

आयुषः प्राणं सन्तनु स्वाहा, प्राणात्-व्यानं, सन्तनु-स्वाहा व्यानानात्-अपानं सन्तनु स्वाहा, अपानात्-चक्षुः सन्तनु स्वाहा, चक्षुषः श्रोत्रं सन्ततु स्वाहा श्रोत्रात् वाचं सन्तनु स्वाहा, वाच आत्मानं सन्तनु स्वाहा, आत्मानः पृथिवीं सन्तनु स्वाहा, पृथिव्या-अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा, अन्तरिक्षात्-दिवं सन्तनु-स्वाहा, दिवः स्वः सन्तनु, स्वाहा। त्वं सोमा सि सत्पति, त्वं राजोतवृत्रहा त्वं भद्रो असि क्रतुः स्वाहा। ऋतु तिथ्यादि दे दें (अन्यथा पढें-**ऋतु तिथ्यादिभ्यः देवताभ्यः स्वाहा-ब्रह्मणेस्वाहा अभिजिते स्वाहा**–चुचवरु के छोटे टुकड़े भी घी के आहुति के साथ डालते जायें) सभी जनता जो मृतक के साथ आई हो यजमान (क्रिया करने वाले) के पास आकर पंक्तिबद्ध रूप में बैठें जनता अलग-अलग टोलियों में बातें न करें बल्कि यदि आप मृतक के अन्तरात्मा की शान्ति के इच्छुक हैं तो निम्न वेदमन्त्रों से आहुति डालते समय श्रद्धा से सामूहिक रूप में **"स्वाहा"** का उच्चरण करें–यह आहुति स्रुव (एक मुख वाले) वमुन हुर से (कर्ता) यजमान ही डालें–

(१) ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(२) ॐ प्राणो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

(३) ॐ अपानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(४) ॐ ब्यानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(५) ॐ उदानो यज्ञेन कल्ल्पता स्वाहा
(६) ॐ सम्मानो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(७) ॐ चक्षु र्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(८) ॐ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(९) ॐ वाक् यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(१०) ॐ मनो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(११) ॐ आत्मा यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(१२) ॐ ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(१३) ॐ ज्योति-र्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(१४) ॐ स्वर्यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(१५) ॐ पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां स्वाहा
(१६) ॐ यज्ञो यज्ञेन कल्पतां स्वाहा

न्यूनं-अतिरिक्ते जुहोमि स्वाहा, अतिरिक्तं न्यूनं जुहोमि स्वाहा, समं समे जुहोमि स्वाहा, अनाज्ञातं, यदाज्ञातं, यत् यज्ञे क्रियते मिथः, सर्वं तत्-अग्ने कल्पय, त्वं हि वेत्थ, यथा यथं स्वाहा, आज्यशेषं स्त्रुचासिच्य, दर्भान् अग्नौ प्रास्य, आज्य

पात्र का घी आदि सभी अग्नि में डालें–अब मृतक के शरीर को पूर्णाहुति के लिये

चित्तावासकलश बनायें

जो पुस्तक के अन्त में दर्ज है

जहां शव का दाह संस्कार करना हो वहाँ लेपन करवा कर तिलक, फूल, अर्घ, लकड़ी की छोटी-छोटी ९ खूँटियाँ जव का आटा, बत्ता का पात्र, लेपन के पास लाकर रखें, अब पहले चितावास की पूजा करनी है, चित्तावास के चित्र में लिखी रेखायें रेखायें जव के आटे से बनायें-इस को माया जाल भी कहते हैं, इन रेखाओं के अनुसार खूँटियाँ अपने स्थान पर दबायें (यह माया जाल धागे से भी बनाया जाता है)

टाकू में जल तथा विष्टर (दर्भ के दो तिनकें) डालकर तीन फूल डालते हुये पढ़े-

संवः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः (१) संसृष्टा, तन्वः सन्तु वः, संसृष्टः प्राणो अस्तु वः (२) संयावः प्रिया स्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः, आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम (३) दर्भ के दो तिनके हाथ में पकड़कर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें-**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितु-र्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।** फिर से पढ़ें-**तत्-सत्-ब्रह्म अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य-मासस्य पक्षस्य तिथौ-वारान्वितायां-ईशाने गगनयुतस्य ईशानस्य आग्नेये-सुकेतु-युतस्य-रुद्रस्य, नैऋते सजलयुतस्य विष्णोः, वायवे वायु-युतस्य**

ईश्वरस्य, मध्ये पृथिवी युतस्य, ब्रह्मण:, इन्द्रस्य, यमस्य, अपांपते:, सोमस्य, पृथिवी युतस्य, चरक्या:, विधार्या:, पूतनाया:, पाप राक्षस्या:, स्कन्दस्य अर्यम्ण:, जम्बकस्य, पिलपिच्छस्य चित्तावास देवतानां आत्मनो पितु: अन्त्यक्रिया निमित्तं अर्चा अहं करष्ये ॐ कुरुष्व। दर्भ के दो दो तिनके ईशानी कोण से डालते हुये पढें :– **चित्तावास देवतानां इदं–आसनं नम:**

दर्भ के दो तिनके चावल सहित हाथ में लेकर पढ़े **चित्तावास देवताम्य: युष्मान् पूजयामि ॐ पूजय,** चावल कन्धों से फैंक कर नया चावल हाथ में लेते हुये पढ़ें–**चित्तावास–देवता आवाहयष्याभि ॐ आवाहय, टाकू** में फिर से अर्घ तथा जल डालते हुये पढ़े–

पाद्यार्थम्–उदकं नम: भगवन्त: पाद्यम्–पाद्यम् यही जल डालते हुये पढ़े

चित्तावास देवताम्य: इदं वो पाद्यं नम: फिर से ऐसे ही जल डालते हुये पढ़ें, **चित्तावास देवता इदं वो अर्घ्यं नम: ।** चितावास की सभी खूंटियों को ईशानीकोण से क्रमश: तिलक लगाते हुये पढ़ें–**चित्तावास देवताभ्य: समालभनं गन्धो नम:** अर्घ फूल चढ़ाते हुये पढ़ें–**चित्तावास–देवताभ्य: अर्घो नम: पुष्पं नम:,**

बत्ता जो आप ने घर से साथ लाया है उसमें से एक टाकू बत्ता उठा कर दूर कहीं संभाल के रख छोड़ें, फिर बाकी बत्ता ईशानी कोण से सभी खूंटियों के पास थोड़ा थोडा डालते हुये पढ़ें। **चितावास देवताभ्यः ॐ नमो नैवेद्यं निवदयामि नमः** हाथ में पानी डालते हुये पढ़े दीपो नमः धूपो नमः, यदि कोई शाल आदि शव पर डालना हो तो उसको छिड़कते हुये पढ़ें-**चित्तावासदेवताभ्यः वासोनमः** फिर से थोड़ा जल डालते हुये पढ़ें **अपोशानं नमः, आचमनीयं नमः,** दक्षिणा डालें, **चित्तावास देवताभ्यः दक्षिणायै तिलहिरण्य रजत निष्कर्णे ददानि**–फिर से कोई सिक्का आदि डाले हुये पढ़ें–**एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।**

"चितावासपूजा समाप्त"

इसी चितावास कलश के ऊपर चिता तैयार करके मृतक को, उस पर रखें, सिर दक्षिण की ओर मुँह पूर्व की ओर रखें। लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़ों के सिरों पर रुई लगा कर घी में डुबो कर रखें, उनको उल्मुक कहते हैं, क्रिया करने वाले को चाहिये एक उल्मुक को टाकू या कतरु में से जलाकर जलते हुये उल्मुक से मृतक के सिर के तरफ से जलाना आरम्भ करें फिर दूसरे साथी उल्मकों से चिता को हर तरफ से जलायें, अब घी का पात्र उमनहुर घी में डाला हुआ अखरोट आदि डालते हुये पढ़ें। **आकूत्यै त्वास्वाहा ईशाने, कामायै त्वा स्वाहा इति वायवे, समृद्धयै त्वा**

स्वाहा इति नैऋते-चिता के तीन प्रदक्षिणा करके सभी उल्मक चिता के पूर्व दक्षिण कोण में फैंके, सभी कर्ता तथा अन्यान्य साथी हाथ में यव तथा कुछ फूल उठा कर खड़े रहें और यह पूर्णाहुति का मन्त्र पढें-**आश्रावितं अत्याश्रावितं वषट्कृतम्-अवषट् कृतम्-अननूक्तं अत्यनूक्तं च, यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो, यत्-च-हीनम्-अग्निस्तानि प्रविदन्-एतु कल्पयन् स्वाहा-फिर से यव आदि की आहुति उठाकर-कर्ता पढ़े-अस्मत् त्वम्-अभिजातोसि, त्वत्-अहं जायते पुनः**-मृतक का नाम लेकर-**आसौ पिता अथवा माता स्वर्गाय लोकाय स्वाहा** (आहुति डालिये) अब अन्त में मृतक के सिर के नीचे जलता हुआ दीपक तथा आग का टोकू रखिये, जब चिता अच्छी प्रकार से प्रज्ज्वलित हो जाये, मृतक का शरीर जब लगभग जल चुका हो-तो कुल्हाड़ी मृतक के सिर के तरफ जमीन में कुछ दबा कर रखें-फिर कर्ता को चाहिये-अस्त्र कलश की वारी को उठा कर उस में नया जल डालिये, चिता के तीन प्रदक्षिणा करते हुये वारी का जल आहिस्ता-आहिस्ता फैंकते हुये अखरी तीसरे प्रदक्षिणा के अन्त में कुल्हाड़ी या पत्थर पर वारी तोड़ दीजिए-उपस्थान करते हुये पढें-

नमो महिम्ने उत चक्षुषे महतां पिता उरु तत् गृणीमः हुतो याहि पथिभि-देवयानैर्-औषधीषु प्रतिष्ठा शरीरैः

कर्ता दर्भ के दो तिनके हाथ में लेकर पढ़े–

पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं चितावास देवतानां पूजनम्-अछिद्रम्-अस्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सभी श्मशान पर आई हुई जनता चित्ता की ओर हाथ जोड़ के रहें–सभी सामूहिक रूप में पढ़े **ॐ यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु यऔषधी·षु यो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तुदेवाः।।**

सभी परिजनों को जहाँ पानी सुलभ हो नहा कर मुख शोद्धन आदि करके बायाँ यज्ञोपवीत रख कर थोड़ा सा तिल हाथ में लेकर तर्पण करना चाहिये तर्पण करते हुये पढे – **ॐ तत् सत् ब्रह्म मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर-पितुः अथवा मातुः अन्त्य क्रिया निमित्तं एतत् तिलोदकम्-एतत् ते उदक-तर्पणम्**

शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अन्त्यदानविधि

मनुष्य मरणसमुख होने पर अन्त्यदान करना आवश्यक है, अन्त्यदान के लिये यथाशक्ति चालव वस्त्र धन आदि एकत्रित करके अन्त्यदान करने वाले मरणो –न्मुख मनुष्य के दायें हाथ में तिल पानी देकर पढ़ें–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकम्-इव बन्धानात्-मृत्योर्मुखीय मामृतात् ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन् यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।। तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य-महीना

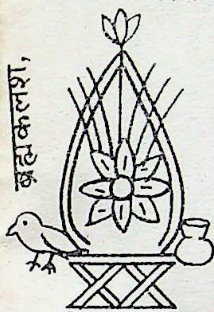
पक्ष वार का नाम लेकर पढ़ें–

आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं विष्णु प्रीत्यर्थं-अन्नं फलं दक्षिणां वस्त्रादि ददानि ददानि ददानि पढ़कर सभी एकत्र किये वस्त्रों पर छींटे देकर–किसी दरिद्र नारायण को श्रद्धा से दीजिये।

अन्त्येष्टि कलश आँगन में भूतपञ्चकं

सभैरव

ब्रह्मकलश,



वामे गायत्री, मध्ये भैरवाय, दक्षिणे इन्द्राय



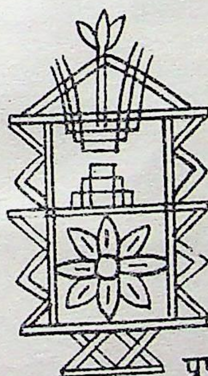


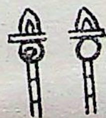






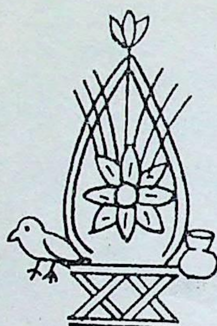
अग्निकुण्ड,



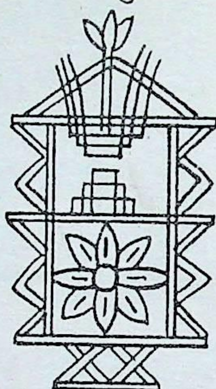


प्रणीत पात्र

ब्रह्मकलश,



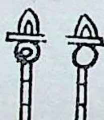
अग्निकुण्ड



दीपक

श्मशान सम्बन्धित कलश।

प्रणीत पात्र,



चित्तावास

गगनयुतस्य, ईशानस्य

रुद्रस्य विधार्याः

इन्द्रस्य चरक्या,

सकेतुयुतस्य

पिलपिञ्जस्य

पृथ्वीयुतस्य

जम्बकस्य

सोमस्य

यमस्य

ब्रह्मणः

पूतनायाः

वायुयुतस्य

अर्यम्णः

पापराक्षस्याः,

अपांपतेः स्कन्धस्य,

श्मशान सम्बन्धित कलश